

न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक

/2014 पुनरीक्षण

सि.स. 523-XX 14

मनजीत पुत्र नारायण सिंह
सचिन पुत्र मोहन सिंह
अभिनन्दन पुत्र मोहन सिंह
श्रीमती विनिताबाई पत्नी मोहन सिंह

1. गायत्रीबाई पुत्री कन्हैयालाल पत्नी परमाल सिंह भीना निवासी ग्राम-नलखेंडा तहसील चाचोडा जिला-गुना
2. गीताबाई पुत्री कन्हैयालाल पत्नी हरस्वरूप भीना निवासी ग्राम उगोविन्दपुरा तहसील राघौगढ जिला-गुना
3. ओमवतीबाई पुत्री कन्हैयालाल पत्नी ओमप्रकाश भीना निवासी ग्राम-महेशपुरा तहसील-चाचौडा जिला-गुना

विरुद्ध

1. मनजीत पुत्र नारायण सिंह जाति मीना निवासी ग्राम डोंगर
2. सचिन पुत्र मोहन सिंह जाति मीना अल्पवयस्क
3. अभिनन्दन पुत्र मोहन सिंह अवयस्क द्वारा संरक्षक श्रीमती विनिताबाई पत्नी मोहन सिंह मीना निवासीग्राम डोंगर तहसील राघौगढ जिला- गुना (म.प्र.)
4. पटवारी हल्का नं.26 ग्राम हुसैनपुर तहसील राघौगढ जिला-गुना (म.प्र.)

Belapurkar
13/02/2014

XXXIX(a)BR(H)-11

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक निमा 0 508 जी / 14

तिल मुद्रा

व. नं. 34
दिनांक

अर्थात्की नया आदेश

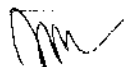
पृष्ठ सं. 2
आ. क्रमांक 10
दिनांक

दिनांक

प्रकरण का अवलोकन किया - यह निगरानी अनुविभागीय अधिकारी द्वारा प्रकरण क्रमांक 09/अपील/13-14 में पारित अतरिम आदेश दिनांक 10-2-14 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है। उक्त आदेश द्वारा अनुविभागीय अधिकारी ने अनावेदक द्वारा पंजीकृत वसीयत के आधार पर प्रस्तुत अपील को पजीबद्ध किया जाकर दोनों पक्षों को सुनने के उपरांत अधीनस्थ न्यायालय के आदेश का कियान्वयन तथा भूमि के विक्रय एवं बैंक में बंधक किए जाने की कार्यवाही को आगामी दिनांक 10-3-14 तक स्थगित किया गया है।

2- प्रकरण में आवेदक अधिवक्ता का यह कहना है कि अनुविभागीय अधिकारी का आदेश अधिकारिता रहित है। विचारण न्यायालय द्वारा मृतक भूमिस्वामी के प्राकृतिक उत्तराधिकारियों का नामांतरण किया गया है। अनावेदको द्वारा एस.डी.ओ. के समक्ष अपील की अनुमति हेतु कोई आवेदन नहीं किया था जब आवेदको ने इस संबंध में आपत्ति कि तब आवेदन दिया गया है इसलिए उनके समक्ष प्रस्तुत अपील प्रचलन योग्य नहीं है। अपील दिनांक 13-1-14 को पेश की गई तथा अनुमति हेतु आवेदन 10-2-13 को दिया गया है अतः अपील 10.2.13 को पेश की होना माना जायेगा। यह भी कहा गया कि अपील समयबाधित है जिसमें उक्त आपत्तियों का निराकरण के पूर्व स्थगन नहीं दिया जा सकता।

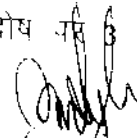
3- अनावेदक अधिवक्ता द्वारा आवेदक अधिवक्ता के तर्कों को खंडन करने हेतु कहा गया कि अनावेदक के पक्ष में मृतक भूमिस्वामी द्वारा पंजीकृत वसीयत की गई है। विचारण न्यायालय द्वारा बिना उन्हें सुनवाई का अवसर दिए आदेश पारित किया है जबकि वह हितधारी एवं आवश्यक पक्षकार है। अतः अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत अपील समयसीमा में ही अनुविभागीय अधिकारी ने स्थगन आदेश उभयपक्ष को सुनने के उपरांत



पारित किया है। प्रकरण का निराकरण अनुविभागीय अधिकारी द्वारा गुणदोष पर किया जाना है जहां आवेदक को अपना पक्ष रखने का समुचित अवसर उपलब्ध है। आवेदकगण जान बूझकर प्रकरण को लंबित रखना चाह रहे हैं। यह भी कहा गया कि वे हितबद्ध एवं आवश्यक पक्षकार हैं इसलिए उन्हें अनुमति हेतु आवेदन प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं है फिर भी उनके द्वारा अनुमति हेतु आवेदन दिया गया है।

4- अनावेदक शासन की ओर से विद्वान अधिवक्ता द्वारा प्रकरण का निराकरण अभिलेख के आधार पर किये जाने का निवेदन किया गया है।

5- उभयपक्षों के विद्वान अधिवक्ताओं के तर्कों पर विचार किया गया एवं अभिलेख का अवलोकन किया। इस प्रकरण में यह स्पष्ट है कि आवेदक के पक्ष में मृतक भूमिस्वागी द्वारा पजीकृत वसीयत की गई है। इस कारण वह आवश्यक एवं हितबद्ध पक्षकार है। तहसीलदार द्वारा उसे बिना सुनवाई का अवसर दिये आदेश पारित किया गया है। ऐसी स्थिति में अनुविभागीय अधिकारी द्वारा उभयपक्ष को सुनने के उपरांत अपील को ग्रह्य कर एवं स्थगन आदेश जारी कर कोई विधिक त्रुटि नहीं की है। प्रकरण का निराकरण गुणदोष पर अभी अनुविभागीय अधिकारी द्वारा किया जाना है, जहां आवेदक को अपना पक्ष रखने का समुचित अवसर उपलब्ध है। माननीय उच्च न्यायालय एवं माननीय उच्चतम न्यायालय ने अनेक प्रकरणों में यह व्यवस्था दी है कि पक्षकारों को गुणदोष पर न्याय दिया जाना चाहिए। तकनीकी आधार पर उच्च न्याय से वचित नया किया जाना चाहिए। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए यह निगरानी निरस्त की जाती है तथा अनुविभागीय अधिकारी को यह निर्देश दिए जाते हैं कि वे उभयपक्ष को सुनवाई का समुचित अवसर देकर प्रकरण का विधिवत निराकरण गुणदोष पर 3 माह में करें।


(एम के सिंह)
सदस्य

राजस्व मंडल, म.प्र. ग्वालियर